सृजन एवं विध्वंस

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन में सकारात्मक विचार सृजन का आधार है और नकारात्मक विचार विध्वंस का मार्ग है। सृजन का मार्ग ही सृष्टी को स्वर्ग बना सकता है। वह स्थान जहां सबमें प्रेम, सौहार्द्र, भाईचारा रहता है वहां सृजन की धारा बहती है। सभी सुविधाएं जनता को प्राप्त होती रहें। चरित्र निर्मल बना रहे, समाज में किसी का शोषण ना हो, देश के सभी नागरिकों को समान रूप से विकास करने का अवसर प्राप्त हो इसी से सृजन होता है। सृजन करने में बहुत समय लगता है। किन्तु विध्वंस क्षण भर में हो जाता है। जल जब नीचे की तरफ बहता है तो बड़े ही आसानी से प्रवाहित होता रहता है। किन्तु जब उसकी दिशा को बदला जाता है तो ऊपर चढ़ने में बहुत कठिनाई होती है। बिना संसाधनों के जल को विपरित दिशा में प्रवाहित नहीं किया जा सकता। सृजन करने में जन, धन और समय लगता है। किन्तु विध्वंस करने में एक पल लगता है। बांधों का निर्माण करना, विद्यालय, जलाशय, सड़कों का निर्माण, पुलों का निर्माण, आवागमन के साधनों का निर्माण सृजन का कार्य है।

मन, वचन और काया से किसी के बारे में बुरा सोचना विध्वंस है। विध्वंस का बीज पहले मानव के मस्तिष्क में उपजता है। मन के बुरे विचार जब कार्य रूप में परिणत होते हैं तब विध्वंस का रूप धारण करते हैं। प्रकृति हमें सृजन की शिक्षा देती है। नदी, पहाड़, पेड़–पौधे, वन, जंगल आदि की रचना से संसार का सौन्दर्य बढ़ रहा है। किन्तु मानव की विशैली सोच इनका विध्वंस करने में लगी हुई है। नदियों का जल विषाक्त होता जा रहा है जिससे जीव–जन्तु मर रहे हैं। मनुष्य की मानसिकता को बदले बिना विध्वंस नहीं रूक सकता। नीड एवं ग्रीड के कारण विनाश या विध्वंस हो रहा है।

आत्मविज्ञान कार्यक्रम में मनुष्य बाहरी जगत् से आन्तरिक जगत् की यात्रा करता है। आंतरिक जगत् से सम्बन्ध बैठाना नीड है, और बाह्य जगत् में अधिक आसक्ति रखना ग्रीड है। जब आत्मा केन्द्र में होती है और जड़ परिधि में रहता है तो मनुष्य का चिंतन सम्यक् रहता है।

नीड का अर्थ है आवश्यकता। आवश्यकता की पूर्ति करना सभी मनुष्यों का कार्य है। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अतिसंग्रह है। मानव की मूलभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा। इसकी पूर्ति सभी को करनी चाहिए। जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है।

ग्रीड का अर्थ है लालच। जड़ वस्तुओं के प्रति लालसा अशांति को उत्पन्न करती है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है। अधिक धन की सुरक्षा करना भी कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊंची कई अट्टालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अटलिकाएं हैं तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है।

व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूलि के समान प्रतीत होने लगते हैं। अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है। धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारे को लेकर भाइयों–भाइयों में कलह छिड़ जाती है। धन की लालसा प्रेम और स्नेह को समाप्त कर देती है।

कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है। अच्छाइयां गुणों का परिवार है और बुराइयां मोह का परिवार है। धन कुछ है, सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए। परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है। चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है।

अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है, उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आ जाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आना, सुनामी आना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है। मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे हैं। उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है, जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दूभर हो जायेगा।